अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

प्रस्तावना

मानव जाति के लिए ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार मानव मस्तिष्क है। मस्तिष्क सीखने के सर्वोच्च केंद्र के रूप में कार्य करता है और चमत्कार करने में सक्षम है। मस्तिष्क, जब उचित रूप से ढाला जाता है, व्यक्तियों को एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने में मदद कर सकता है। वह प्रणाली जो मस्तिष्क की कार्य प्रणाली में बदलाव लाती है, उसे हम शिक्षा प्रणाली के रूप में पहचानते हैं। इस प्रकार शिक्षा को एक प्रणाली के रूप में समझा जाता है, जिसका लक्ष्य अपने शिक्षार्थियों का सामंजस्य पूर्ण और प्रगतिशील विकास है। मानवता को मानवीय बनाने के अलावा, यह व्यक्तियों को तर्क, सोचने की क्षमता, समस्या सुलझाने के कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने में सक्षम बनाता है। यही कारण है कि एक सफल शैक्षिक प्रणाली को अक्सर एक तर्कसंगत, सभ्य और जिम्मेदार सामाजीकरण माना जाता है और शिक्षक इस शिक्षा प्रणाली के प्राथमिक हित धारकों में से एक हैं। यह प्रणाली कई और विविध कारकों का संकलन और उत्पाद है जिन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

- छात्रों, उनके घरों, उनके पर्यावरण से संबंधित कारक।
- स्कूल से संबंधित कारक।
- शिक्षा व्यवस्था से संबंधित कारक। (वेगास और पेट्रो, 2008)

अमेरिकी शिक्षक शिक्षा आयोग (1974) के अनुसार, "किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है और उसके नागरिकों की गुणवत्ता उनके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। "वास्तव में, स्कूल की ओर से, छात्रों को सीखने और आवश्यक कौशल हासिल करने के लिए शिक्षकों को सबसे महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। वे मुख्य खिलाड़ी हैं जो छात्रों की उपलब्धि, कौशल विकास को बढ़ाने और समान अवसर प्रदान करने में मदद करते हैं (हनुशेक और रेविन, 2012; हनुशेक, 2011; केन और स्टैगर, 2008).

शिक्षा आयोग (1964-66) ने भी माना कि किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, जो युवा पीढ़ी को तेज कर के कक्षा को आकार देते हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि कोई भी शिक्षा प्रणाली अपने शिक्षकों की गुणवत्ता के स्तर से कभी ऊपर नहीं उठ सकती, इस प्रकार, यह कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षकों में निर्माण करने की परम शक्तियाँ

होती हैं या समाज को ख़राब कर दो, जैसा कि सोढ़ी (2010) ने भी कहा था, शिक्षक संभावित रूप से व्यक्तित्वों का एकीकरणकर्ता, शिक्षार्थियों के लिए परामर्शदाता और मार्गदर्शक, नागरिकों का विकासकर्ता और व्यक्ति के संरक्षक के रूप में राज्य का सेवक होता है।

एक समाज जो आकार लेता है वह काफी हद तक उसके शिक्षकों की गुणवत्ता के कारण होता है और इसे डॉ. एस. राधाकृष्णन ने बहाल किया था, जिन्होंने कहा था कि, "समाज में शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह बौद्धिक परंपरा और तकनीकी के संचरण बिंदु के रूप में कार्य करता है। "पीढ़ी-दर-पीढ़ी कौशल सभ्यता के दीपक को जलाए रखने में मदद करता है।"

सबूतों के बढ़ते समूह से पता चलता है कि स्कूल छात्रों की उपलब्धि के मामले में पर्याप्त अंतर ला सकते हैं और इसका एक बड़ा हिस्सा शिक्षकों को जिम्मेदार है। किसी स्कूल की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की प्रभावशीलता पर काफी हद तक निर्भर करती है, क्योंकि स्कूल उतने ही अच्छे होते हैं जितने अच्छे शिक्षक होते हैं । (डार्लिंग और हैमंड, 2015)।

चूँकि इस बात पर कोई आम सहमति नहीं है कि "अच्छा शिक्षण" या "प्रभावी शिक्षण" के रूप में क्या परिभाषित किया जा सकता है, शिक्षक प्रभावशीलता को अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया गया है, जिसका मूल विचार यह है, कि एक शिक्षक की भूमि का में केवल विषय-वस्तु निर्देश प्रदान करने से कहीं अधिक शामिल है। इसके बजाय यह वह प्रभाव है जो शिक्षण विधियों, शिक्षक अपेक्षाओं, कक्षा संगठन और कक्षा संसाधनों के उपयोग जैसे कक्षा कारकों का छात्र के प्रदर्शन पर पड़ता है (कैंपबेल क्यारी किड्स मुइज़ रॉबिन्सन, 2004) इस प्रकार शिक्षण को प्रक्रियाओं के एक जटिल समूह के रूप में देखा जा सकता है जिसमें महत्वपूर्ण सोच क्षमताओं, जिज्ञासा और नए विचारों को उत्पन्न करने के लिए सामग्री साझा करना और शिक्षार्थियों को समस्या समाधान के लिए इस ज्ञान का उपयोग करने में सक्षम बनाना शामिल है। हाल के वर्षों में शिक्षक प्रभावशीलता पर अधिक ध्यान दिया गया है। शिक्षण केवल व्याख्यान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षकों से छात्रों को उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित करने, समझाने, संलग्न करने, समझने और मार्ग दर्शन करने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने छात्रों को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों के निर्धारित ढांचे के तहत सामग्री, अवधारणाओं, दृष्टिकोण, मूल्यों, ज्ञान और कौशल की ओर मार्ग दर्शन करें। उनसे व्यावसायिक दक्षता, शैक्षिक दक्षता और सामाजिक पर्याप्तता की भी अपेक्षा की जाती है।

इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि शिक्षा की प्रभावशीलता उसके शिक्षकों की प्रभावशीलता पर बहुत अधिक निर्भर है।

यह भी सिद्ध हुआ है कि शिक्षक की प्रभावशीलता से छात्रों के सीखने में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। इक्काडोर में इंटर - अमेरिकन डेवलपमेंट बैंक (2019) के एक अध्ययन में पाया गया कि एक प्रभावी शिक्षक सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित और सुविधा प्राप्त घरों के छात्रों के बीच सीखने के अंतराल को कम कर सकता है। इस बात के सबूत हैं कि शिक्षकों की छात्रों की सीखने की क्षमता में व्यापक भिन्नता है, जिससे प्रभावी शिक्षकों की पहचान करने के तरीके पर ध्यान केंद्रित हो गया है, (ब्रून्स और ल्यूक, 2014) एक प्रभावी शिक्षक की विशेषताओं को कृष्णन और नाइटिंगेल (1994) ने इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया है :- वह विभिन्न प्रकार के ऑडियो - विज़ुअल का उपयोग करके, शिक्षण के विभिन्न तरीकों का उपयोग कर के पढ़ा सकता है :-

- उसकी नैतिक प्रतिष्ठा होनी चाहिए ।
- उसमें बौद्धिक गहराई होनी चाहिए ।
- उसमें हास्य की भावना होनी चाहिए ।
- वह सर्वांगीण व्यक्तित्व का व्यक्ति होना चाहिए ।
- पढ़ाते समय उसे आश्वस्त और सहज होना चाहिए ।
- विद्यार्थियों के साथ उनके अच्छे संबंध हैं ।

यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि शिक्षा न केवल अपने कार्य के प्रति निष्ठावन, सच्चरित्र हो तथा जिनमें पढ़ने की भूख हो, इस व्यवसाय में चुने जाने चाहिये। आज के युग में शिक्षा एक उद्योग एक तकनीकी का रूप ले चुकी है। आधुनिक युग में शिक्षकों एवं शिक्षक - महाविद्यालयों का कार्यभार एवं महत्व बहुत बढ़ गया है।

भारतीय संस्कृति में अध्यापक के लिये 'गुरु' शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है- भारी, वजनदार। यह व्यवसाय बड़ा ही गरिमामय है इन्हें बड़े ही शक्तिशाली कन्धों की आवश्यकता है, इस व्यवसाय को वहन करने हेतु। केवल वही व्यक्ति जो अपने कार्य के प्रति निष्ठावन, सच्चरित्र हो तथा जिनमें पढ़ने की भूख हो, इस व्यवसाय में चुने जाने चाहिये। अफसोस की बात तो यह है कि अध्यापन को एक विज्ञान तथा टेक्नोलोजी के पद तक सुसज्जित करने के बावजूद अध्यापकों में अपने व्यवसाय के प्रति

निष्ठा में गिरावट सी दृष्टिगोचर हो रही है, और इसका कारण है, हमारी सामाजिक व्यवस्था, वर्तमान शिक्षा-पद्धति और हमारे ये शिक्षक महाविद्यालय ।

प्राचीन समय में शिक्षक ही शिक्षण का सर्वेसर्वा माना जाता था। शिक्षा समाज को परिवर्तन में समायोजित होने योग्य बनाती है इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, चरित्र, आचरण, मनोवृति, भावनाओं आदि में जो परिवर्तन होते हैं, उसके कारण व्यक्ति में सुसंस्कृत एवं सुंदर जीवन व्यतीत करने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षा के इस पुनीत काम में सहयोगी होता है, शिक्षक।

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विकासशील देश में माध्यमिक शिक्षा का महत्व विशेष रूप से है। जिस प्रकार से मानव शरीर का महत्वपूर्ण भाग उसका धड़ होता है। उसी प्रकार शैक्षिक संरचना का मध्य भाग उसकी माध्यमिक शिक्षा होती है। प्राथमिक व उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी माध्यमिक शिक्षा ही है वास्तव में योग्य, कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक ही वह धुरी है, जिसके चारों ओर संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है।

शिक्षा का तात्पर्य छात्र के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से है। शिक्षा का उद्देश्य छात्र के विषय ज्ञान से ही पूर्ण नहीं हो जाता। शिक्षा का तात्पर्य देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने वाले नागरिकों के निर्माण से हैं। छात्र के बौद्धिक मानसिक विकास के साथ-साथ उसका नैतिक, चारित्रिक और सामाजिक विकास करना भी हमारे शिक्षकों का ही दायित्व है।

उपनिषद् में कहा गया है :-

तेज़स्विनावधीतमस्तु

ॐ सहनवतु, सह नौ भुनक्तु।

सह वीर्यं करवावहि। मा विदविशावहै ।। अर्थात्

हे ईश्वर ! हम सभी साथ-साथ रहें, सभी वस्तुओं का उपभोग करते रहें, हम सभी अपनी शक्ति और मानक में वृद्धि करते रहें, अपने तेज को बनाए रखें, लेकिन हे प्रभु ! हम सबसे दूर रहें। लेकिन आज यह बड़े अफसोस की बात है कि हमारे शिक्षक महाविद्यालयों में भावी अध्यापकों के बौद्धिक व मानसिक विकास को तो ध्यान में रखा जाता है किन्तु उसके नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक व संवेगात्मक विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया ।

अध्यापक की भूमिका

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को सुसम्पन्न बनाने के लिए शिक्षक की भूमिका अत्यावश्यक है। एक सच्चा शिक्षक मानवता का उद्घोषक, संस्कृति का संदेशवाहक और जागरूक व कर्तव्यनिष्ठ नागरिक होता है। बच्चों का अधिकांश समय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ही व्यतीत होता है और इस दौरान वे अपने शिक्षकों के न केवल सम्पर्क में आते हैं, वरन् उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनका अनुसरण भी करते हैं। अतः पाठशालाओं में शिक्षकगण बच्चों के भविष्य को सुधार सकते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है, क्योंकि शिक्षकों के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप बच्चों में परिलक्षित होती है। अतः शिक्षकों को स्वयं उच्च चरित्र का आदर्श स्थापित कर बच्चों के चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व को मुखरित करने के लिए अपना अमूल्य योगदान देना चाहिए। शिक्षकों का कार्य केवल रोजी-रोटी कमाना मात्र ही नहीं है, वरन् उससे भी बहुत ऊँचा है। समाज व देश के बच्चे शिक्षकों से बहुत आशा रखते हैं। तभी तो देश के बच्चे शिक्षकों के सुपुर्द किए जाते हैं, ताकि जब वे पढ़कर निकलें, तो वे एक आदर्श नागरिक बन सकें। शिक्षकों में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव उनमें अपने आप जागृत होना चाहिए। तभी वे कुछ कर सकते हैं। क्योंकि यदि वे अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा से नहीं करते हैं तो, यह बच्चों के साथ अन्याय होगा, जिनके भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई है। बिना गुरु के ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिए हमारे देश में गुरु की अपार महिमा है। वहीं अपने शिष्यों को संसार का वास्तविक दर्शन करवाता है। गुरु शिष्यों का सच्चा दर्पण है। अतः एक गुरु को सद्विचारी, चरित्रवान तथा निर्मल हृदयी होना जरूरी है, जिससे विद्यार्थी प्रेरणा ग्रहण कर सकें। भारतीय धर्मग्रन्थों में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान बतलाया गया है। महाकवि तुलसीदास ने भी "सबसे दुर्लभ मनुज शरीर।" उक्ति के माध्यम से बताया गया है कि मनुष्य जीवन मिलना बड़ा कठिन है।

सारी शिक्षा का उत्तरदायित्व अध्यापकों के कंधों पर है और अध्यापक कुम्भकार है, जो बच्चे रूपी घड़े को जैसा आकार और रूप देना चाहे, दे सकता है। इस प्रकार यदि यह कहा जाए कि शिक्षक भारत के भविष्य का निर्माता है तो शायद अतिश्योक्ति न होगी, क्योंकि भारत के भविष्य रूपी बच्चों को बनाने एवं बिगाड़ने का दायित्व अध्यापक का ही है। मगर अफसोस की बात यह है कि जो शिक्षक स्वयं अन्धकार में डूबा हुआ है, अपने आप में उलझा हुआ है, वह भारत का निर्माण कैसे करेगा? वर्तमान का यथार्थ यही है। आखिर हो भी क्यों? अध्यापक ईश्वर का गढ़ा हुआ कोई विशेष फरिश्ता तो

है, नहीं जो इस दुनिया से ऊपर उठकर रह जाता है आखिरकार वह भी तो समाज का ही एक अभिन्न अंग है। अतः उसकी भी कुछ आवश्यकताएं एवं समस्याएं जरूर होगी। अगर उसकी समस्याएँ हल नहीं हो पाती है, तो उसका परेशान होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। इन्हीं परेशानियों की वजह से उसमें (शिक्षक) कार्य के प्रति असन्तोष, शिक्षण व्यवसाय के प्रति उसके मनोबल का गिरना, शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समायोजित होने की समस्या एवं व्यक्तित्व में बदलाव आ जाता है।
जीवन की वास्तविकता यह है कि शिक्षक एक ऐसा संदेशवाहक है, जो किस प्रकार की भावनाओं को छात्रों में प्रतिस्थापित करना चाहे, वैसा कर सकता है। भारत जैसे देश में जन मानस को जागरूक करने का प्रयास एक शिक्षक बहुत अच्छी तरह से कर सकता है, वैसा अन्य व्यक्ति के द्वारा संभव नहीं है। बालक के सर्वागीण विकास में शिक्षक को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। शिक्षक ही वास्तव में बालक समुचित (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक) विकास कर सकता है। जिस प्रकार महाविद्यालयों / विद्यालयों में प्राचार्य मस्तिष्क के रूप में होता है ठीक उसी प्रकार आत्मा स्वरूप होता है। अतः आत्मा के बिना विद्यालय एवं महावविद्यालय रूपी शरीर निर्जीव माना जाएगा। इसलिए यह कहना उचित होगा कि शिक्षक विद्यालय रूपी समाज का अति महत्वपूर्ण अंग होता है।

यह सर्वविदित है कि अध्यापक चाहे किसी भी शैक्षिक संस्थान में कार्यरत हो, वह संस्थान में अध्ययनरत छात्रों का पथ प्रदर्शक होता है। छात्र अपने अध्यापक की बातों को अन्य की अपेक्षा अधिक महत्व देता है। वह (छात्र) अध्यापक द्वारा निर्देशित सभी कार्यों को ध्यानपूर्वक सम्पन्न करता है। यदि अध्यापक द्वारा दिए गए निर्देश उचित नहीं होते हैं, तो इसका नकारात्मक प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसके विपरीत यदि अध्यापक द्वारा उचित और प्रभावी शैक्षिक निर्देश छात्रों को दिए गए हैं तो इससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में उचित सुधार होता है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य होना चाहिए, कि वह प्रत्येक व्यक्ति में सामान्य शिक्षा एवं व्यक्तिगत संस्कृति का विकास करें उसकी शिक्षण की योग्यताओं को विकसित करें।

प्रभावी शिक्षण क्या है ?

शिक्षक जिस सीमा तक शिक्षार्थी पर प्रभाव डालने में सफल होता है, वह उसी सीमा तक प्रभावी शिक्षक कहलाता है और शिक्षण उद्देश्य भी उसी सीमा तक पूरा हो जाता है। प्रभावकारी शिक्षण का

अर्थ शिक्षक की कार्यक्षमता से है जिस सीमा तक वह अपने कार्य में कुशल हो पाता है उस हद तक उसे प्रभावी माना जाता है।

दाश के अनुसार, "प्रभावकारी शिक्षण का अर्थ है शिक्षण की पूर्णता अर्थात् कार्य-कुशलता तथा उत्पादकता का अनुकूलतम स्तर । "

शिक्षार्थी सरलता से अधिगम कर सकें, पाठ्य-वस्तु को सरलता से ग्रहण कर सकें तथा शिक्षण समय का शिक्षक अधिकाधिक समुचित प्रयोग कर सके, इसके लिए पाठ योजना का संगठन तथा विषय-वस्तु पर प्रभुत्व के साथ-साथ शिक्षक को रोचक विधियों का भी अपने शिक्षण में प्रयोग करना चाहिए तभी शिक्षण प्रभावी होगा।

शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को पांठ योजना में निर्धारित क्रियाकलापों के अलावा तुरन्त परिवर्तन हेतु निर्णय लेने पड़ते हैं।

शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के उपाय

(1) **पाठ - योजना का निर्माण** – कक्षा शिक्षण से पूर्व पाठयोजना का निर्माण करके तथा उसी योजनानुसार शिक्षण करके शिक्षक प्रभावी शिक्षण करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

(2) **उद्देश्यों का ज्ञान** – शिक्षा के उद्देश्यों का ज्ञान होने पर ही शिक्षक उन्हें प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्रियाएँ करके शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है।

(3) **उपयुक्त शिक्षण विधियों का ज्ञान एवं प्रयोग** — प्रभावशाली शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि का प्रयोग आवश्यक होता है।

(4) **शिक्षण कौशलों का प्रयोग** — अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को आवश्यकतानुसार विभिन्न शिक्षण कौशलों का प्रयोग करना चाहिए।

(5) **विषय - वस्तु का ज्ञान** – शिक्षक को पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। तभी वह आत्मविश्वासपूर्वक शिक्षण कर इसे प्रभावी बना सकता है।

(6) **पुनर्बलन का उपयोग** — छात्रों का सहयोग शिक्षण में मिलने से ही शिक्षण प्रभावी बनता है । इसके लिए शिक्षक को शिक्षण के मध्य छात्रों को सही अनुक्रिया के लिए उन्हें पुनर्बलन प्रदान करना चाहिए।

(7) **शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग** – शिक्षण को रोचक, सरल तथा प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को पाठ्यवस्तु तथा छात्रों के स्तर के अनुसार शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

(8) **शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का पालन** – शिक्षक को शिक्षण के समय शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए। इसके द्वारा शिक्षण को प्रभावशीलता में वृद्धि की जा सकती है।

(9) **मूल्यांकन परिणामों के आधार पर शिक्षण में सुधार** – मूल्यांकन से प्राप्त परिणामों के द्वारा शिक्षक को शिक्षण की प्रभावशीलता का ज्ञान होता है, उसे आवश्यकतानुसार सुधार के द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

(10) **स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास** – शिक्षक को अपने अन्दर स्वाध्याय की आदत का विकास करना चाहिए क्योंकि इससे वह अपने ज्ञान भण्डार को विस्तृत एवं व्यापक बना सकता है। परिणामस्वरूप शिक्षण प्रभावी बन जाता है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण प्रभावशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षण प्रभाविता से अध्यापक की कार्य क्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है।

यहां प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है,कि यहां प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों को जोड़कर शिक्षण प्रभावशीलता का पता लगाने का प्रयास है। जबकि इन्हीं विभिन्न घटकों द्वारा ही शिक्षण की

प्रभावशीलता में वृद्धि होकर उस में ठोस परिवर्तन आता है। इसी से अध्यापक की कार्य क्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है। शिक्षा में शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम

एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में पाठ्यवस्तु ही स्थानांतरित नहीं की जाती, अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छवि छोड़ते हैं। एक अच्छा शिक्षक छात्रों को प्रभावी मार्गदर्शन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है।

शिक्षक प्रभावशीलता क्या है ?

शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों को इस प्रकार पहचाना जा सकता है:

1. **शिक्षण** - विषय वस्तु ज्ञान अनुदेशात्मक अभ्यास कौशल शैक्षणिक ज्ञान तैयारी और योजना मूल्यांकन, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया I
2. **एक व्यक्ति के रूप में शिक्षक** - संचार मन मनोसामाजिक संसाधनों, और दृष्टिकोण, सांस्कृतिक योग्यता को फ्रेम करता है I
3. **एक शिक्षक के रूप में व्यवहार** - व्यावसायिकता नेतृत्व प्रत्यायन और साख मानकों के एक सेट का पालन करेंI
4. **निरंतर सीखना** - कौशल एवं विशेषज्ञता कैरियर प्रगति, विषय विशेषज्ञता I

शिक्षक प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षण कौशल व्यवसाय की योग्यता और तथा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने से हैं। प्रभावशीलता एक सापेक्षिक प्रत्यय है। यह किसी मानदंड की ओर संकेत करता है।

डी. जी. रायन प्रभावशीलता के लिए तीन मानदंडों का उल्लेख किया है।

1. योग्यता मानदंड
2. प्रक्रिया मानदंड
3. परिणाम मानदंड ।

प्रभावशाली शिक्षक के गुण

1. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक को आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक वृद्धि के संदर्भ में राष्ट्रीय उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए।
2. उसे व्यवसाय की चुनौती की सराहना करनी चाहिए तथा उन संभावनाओं का पता लगाना चाहिए जिससे कमियों की क्षतिपूर्ति हो सके।
3. उसे देश के लिए अपने कार्य की महत्ता का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।
4. शिक्षक को प्रजातांत्रिक मूल्यों का सम्मान करना चाहिए और उसे अपने व्यवहार पर गर्व होना चाहिए।
5. अध्यापक का स्वस्थ संवेगात्मक विकास होना चाहिए और उसे प्रसन्न रहना चाहिए जिससे छात्र उसके विभिन्न रूपों को अपने जीवन में उपयोगकर सकें।

6. शिक्षक को अभिभावक एवं समुदाय से सतत संपर्क रखना चाहिए।
7. अध्यापक को सभी प्रकार की सूचनाएं रखनी चाहिए तथा उसे जिज्ञासु होना चाहिए पढ़ाए जाने वाले विषय के अलावा सामायिक पत्रिकाओं को पढ़ाने की रुचि होने चाहिए।
8. उसमें उच्च कोटि की संवाद क्षमता स्पष्टता शुद्धता तथा तार्किकता होनी चाहिए।
9. उसे मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को समझना चाहिए।
10. उसे विद्यालय के प्रति शुभ-चिंतक होना चाहिए अन्य अध्यापकों के साथ मिलकर विद्यालय की स्थिति को सुरक्षित करना चाहिए।
11. समाज प्रगतिशील होता है उसकी प्रगति के साथ ही शिक्षक को भी प्रगतिशील होना चाहिए।

समस्या के चयन एवं आवश्यकता

- माध्यिमक शिक्षा के सार्वभौमिक पहुंच और गुणवत्ता को सुधारने के लिए हर तीन किलोमीटर की दूरी पर एक माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया है।
- माध्यमिक शिक्षा के सार्वत्रिक पहुंच के लिए ।
- माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए।
- हर तीन किलोमीटर की दूरी पर स्कूल खोले जाने के कारण कार्य कुशल योग्य पढे लिखे शिक्षकों की कमी को पूरा करने हेतु।

शिक्षक क्या अपने कार्य का समापन चालन उचित तरीके से करने में सक्षम है ? क्या ये शिक्षक अपना कार्य पूर्ण निपुणता से सम्पन्न करते है ? क्या शिक्षक का शिक्षण प्रभाव है ?क्या बच्चों पर अपनी अमिट छाप छोडने में सक्षम है ? शिक्षक का कक्षा शिक्षण कितना प्रभावी है ? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। शिक्षकों के शिक्षण प्रक्रिया शिक्षा तथा छात्रों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु समस्या का चयन किया गया।

समस्या का कथन

भोपाल जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन ।

शोध के चर

शोध समस्या में निम्न चर है :

आश्रित चर : शिक्षक प्रभावशीलता ।

स्वतंत्र चर : लिंग, अनुभव, सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय ।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंगके आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है।

सीमांकन

1. इस अध्ययन का शोध भोपाल में किया गया है।
2. इसमें मात्र 40 शिक्षकों को ही चुना गया है।
3. इस अध्ययन में शिक्षक एवं शिक्षिकाएं दोनों का ही चयन किया गया है।
4. इस अध्ययन में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया है।